शाकुम्भरी देवी; पीरान कलियर; पौंटा साहिब:

SHAKUMBHARI DEVI; PIRAN-KALIAR; PONTA SAHIB:

RELIGIOUS TOURISM / PILGRIMAGE

धार्मिक पर्यटन विश्व में सर्वाधिक भारत में होता है। जहाँ ईसाई जगत वेटिकन सिटी और मुस्लिम जगत मक्का मदीना, यहूदी येरूशलम जाते हैं वहीं भारत के कोने-कोने में विभिन्न धर्मों के तीर्थस्थल हैं जहाँ सालों-साल अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक आते हैं। हिन्दू भाइयों के चार धाम, तीर्थराज पुष्कर, प्रयागराज, काशी, मथुरा, कोणार्क, तिरुपति, शिरडी, मीनाक्षीपुरम्, वैष्णोदेवी तथा मान सरोवर, रामेश्वरम्, पद्मनाभ मंदिर हैं, मुस्लिम भाइयों के अजमेर, कलियर, निज़ामुद्दीन, सीकरी, हाजी अली, गुलबर्गा, देवा शरीफ़ इत्यादि हैं, सिक्खों के अमृतसर, पौंटा साहिब, पंजा साहिब, हुमडुमा साहिब, पटना साहिब, हेमकुंट, नान्देड़, तलवंडी साबो आदि हैं; बौद्धों के कुशीनगर, सारनाथ, श्रावस्ती, बोध गया, राजगीर, संकिसा व लुम्बनी हैं; जैनियों के महाबलीपुरम्, पारसियों की नवसारी-अगियारी, लिंगायतों का होडल संगम, कबीरपंथियों का मगहर तथा अनेक मत-मतान्तरों के धार्मिक पर्यटन स्थल हैं जहाँ कुंभ पर्व में, उर्स में, गुरुपरब में, बुद्ध पूर्णिमा में तथा अन्य धार्मिक पर्वों पर विशाल मेले लगते हैं और लाखों पर्यटक दूर-दूर से यात्रा करते हैं; पर्यटक-उत्पादों की बिक्री व ख़रीददारी होती है; टूरिस्ट कम्पनियाँ, पैकेज टूर, परिवहन तथा टूरिस्ट लाज, धर्मशालाएँ तथा होटल इन्डस्ट्री की खूब आय होती है।

SHAKUMBHARI DEVI

शाकुम्भरी देवी: उत्तर प्रदेश के पश्चिमी ज़िले सहारनपुर में स्थित शाकुम्भरी देवी का मंदिर किंवदन्ती के अनुसार राना बहादुर सिंह पुंडीर के द्वारा बनवाया गया था जो जसमूर के राजपूतों के प्रतिनिधि थे। ये शक्तिपीठ नवरात्रि के समय देवी भक्तों को आकर्षित करता है। 1960 में इसका विशाल स्वरूप बना जब छुटमलपुर (यमुनानगर) के कलसिया कोषपाल राधा किशन ने प्रयास किया। पास में ही भूरादेव मंदिर भी है। पहाड़ियों से घिरे सुरम्य वातावरण में यह आस्थावादियों को आकर्षित करता है। शाकुंभरी देवी के और भी मंदिर देश में हैं जो देवी पूजा से जुड़े हैं, इसे शक्ति-उपासना भी कहा जाता है। सीकर में भी शक्तिपीठ है, सांभर झील के पास भी एक पीठ है; देवी पुण्डीरों की और गुरजरों की देवी है; आश्विन और चैत्र में वर्ष में दो बार यहाँ मेला लगता है। भक्त पहले भूरा देव के दर्शन करते हैं फिर माता के दर्शन को जाते हैं। सन् 2000 में 'जय शाकुंभरी माँ' फ़िल्म भी बनी। यहाँ ऋषी मुनी शाकाहार ही करते हैं। 'शाकम्भरी' संस्कृत में देवी पार्वती का अवतार कहा गया है जो हरी शाक-सब्जियों के प्रसाद की परंपरा में है। आदिशक्ति अष्ट भुजाओं वाली है, 'The Bearer of the Greens' भी कहलाती है। शिवालिक की पहाड़ियों में पहली बार एक चरवाहे ने धाम को खोजा था, जिसकी वहाँ समाधि भी है। शताक्षी देवी अन्न, हरी सब्ज़ियों, हरे फलों, हरी लताओं तथा बालियों को धारण किये हुए है, इसीलिए उसे शाकम्भरी कहा गया। भक्तों का भरण-पोषण वह हरियाली से करती है। देवी ने यहाँ दुर्गमासुर का वध किया था; असत्य पर सत्य की विजय हुई थी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में उत्तराखण्ड बन जाने के बाद यह काफ़ी चर्चित धार्मिक पर्यटन का केन्द्र है जहाँ हज़ारों पर्यटक मेले में आते हैं।

—2

पीरान-कलियर: उत्तराखण्ड में रुड़की के निकट यह एक मुस्लिम सूफ़ी दरगाह है जो तेरहवीं सदी के महान सूफ़ी सन्त अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियरी की मज़ार है। गंग नहर के किनारे कलियर गाँव की यह दरगाह इब्राहीम लोदी के समय बनायी गयी थी जहाँ सरकार साबिर पाक दफ़न हैं जो चिश्ती सिलसिले के सूफ़ी थे। ये बाबा फ़रीद के उत्तराधिकारी थे और साबिरिया शाखा के प्रथम सूफ़ी थे। साबिर कलियरी का जन्म मुल्तान के कोहट वाले नगर में 1196 ई० (592 हिजरी) को बाबा फ़रीद की बड़ी बहिन जमीला खातून के गर्भ से हुआ था। पिता सैयद अब्दुल रहीम की मृत्यु के बाद माँ उन्हे 1204 में पाकपत्तन में बाबा फ़रीद के पास ले आयीं। ये बड़े संयमी व कम खाने वाले थे, इसलिये उन्हे 'साबिर' कहा गया। 1253 में उन्हे बाबा ने कलियर का संरक्षक बनाकर भेजा, जहाँ 1291 (690 हिजरी) में उनका अन्त हुआ। हज़रत साबिर अपने जलाल के लिए भी जाने जाते थे। उनकी मज़ार के पास का गाँव विकसित हुआ। हरिद्वार लोक सभा में पीरान कलियर शरीफ़ विधान सभा है, यहाँ भारत की प्रथम माल गाड़ी 1851 में रुड़की तक चलाई गयी थी। हरिद्वार-दिल्ली राजमार्ग पर यह स्थित है; उर्स में यहाँ हज़ारों अन्तरराष्ट्रीय पर्यटक आते हैं। हिन्दू-मुस्लिम सभी यहाँ मुरादें लेकर जाते हैं; यहाँ अन्य दरगाहों में इमाम साहब, किलकिली साहब, नमक वाला पीर, अब्दाल साहब, नौ गज़ा पीर भी हैं। यहाँ 12 रबीउलअव्वल को हर साल मेला लगता है, लाखों जायरीन श्रद्धालु आते हैं; यह हिन्दू-मुस्लिम एकता की भी मिसाल है। यहाँ भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति तथा चर्म रोग से भी मुक्ति की बात कही जाती है। यहाँ बड़ी मात्रा में पर्यटक-उत्पाद की बिक्री व खरीददारी होती है। भारत में अजमेर शरीफ़ के बाद ये उपमहाद्वीप की सबसे भीड़ वाली दरगाह मानी जाती है।

पौंटा साहिब: हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर यह एक औद्योगिक नगरी है; सीमेंट, दवाओं तथा जलविद्युत का, कपड़ा, रसायन व चूना पत्थर का भी उद्योग यहाँ है। यमुना नदी के तट पर यहाँ सिक्खों का प्रसिद्ध पौंटा साहिब गुरद्वारा है। यह नदी पार उत्तराखण्ड की सीमा से लगता है। दशम गुरु गोविन्द सिंह ने इसे बसाया था; इसका सम्बन्ध बन्दा बैरागी उर्फ़ बंदा बहादुर से भी था। इसका मूल नाम 'पाँवटिका' अर्थात् जहाँ पैर टिक जाम, था; यहाँ गुरु गोविंद सिंह का घोड़ा टिक गया था; वे यहाँ साढ़े चार वर्ष रहे थे; उन्होंने यहाँ कई ग्रंथों की रचना की थी। गुरद्वारे में एक संग्रहालय भी है जहाँ गुरु के शस्त्रास्त्र काफ़ी रखे हुए हैं। यहीं गुरु गोविन्द के बड़े बेटे अजित सिंह का भी जन्म हुआ था। सिक्ख समाज में इस गुरद्वारे की बड़ी मान्यता है। यहाँ की तालाब स्नान व की दस्तार स्नान भी है, यहाँ पगड़ी बांधने की प्रतियोगिता होती है। साथ में यमुना देवी का एक मंदिर भी है। पास में कुछ दूरी पर गुरद्वारा भंगानी साहिब और गुरद्वारा तीर गढ़ी साहिब भी है; उस पार बाबा भूरे शाह की दरगाह भी है। गुरद्वारा शेरगढ़ साहिब भी है। यहाँ बड़े अन्तरराष्ट्रीय पर्यटक आते हैं। हिमाचल व उत्तराखण्ड दोनो सरकारें प्रबन्ध करती हैं; ऐतिहासिक महत्व के इस धार्मिक पर्यटन केन्द्र पर पर्यटक उत्पाद भी बिकते हैं। हजारो की संख्या में दूर-दूर से तीर्थयात्री यहाँ दर्शन करने आते हैं। पहाड़ी सौन्दर्य व नदी के सुरम्य तट पर यह पर्यटकों को काफ़ी आकर्षित करता है।

SABIR PAK

PIRAN-KALIYAR

PAONTA SAHIB